शहीद स्मृति सप्ताह के अवसर पर डीकेएसजेड़सी का आह्वान

28 जुलाई से 3 अगस्त तक गांव–गांव में शहीद स्मृति सप्ताह जोर–शोर से मनायेंगे!

शहीद योद्धाओं की बोल्शेविक स्फूर्ति को अपनाकर क्रांतिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में आखिरी सांस तक डटे रहेंगे!

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

शहीद स्मृति सप्ताह के अवसर पर डीकेएसजेड़सी का आह्वान

शोषण विहीन समाज के लिए अपनी जानें कुरबान करने वाले

वीर शहीदों को लाल–लाल सलाम!

पार्टी कतारों, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकारों, जन संगठनों व क्रांतिकारी जनता!

आगामी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक गांव–गांव में शहीद स्मृति सप्ताह जोर–शोर से मनाने व शहीद योद्धाओं को जोहार अर्पित करने दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी पार्टी कतारों, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकारों, जन संगठनों व क्रांतिकारी जनता का आह्वान करती है। शहीद स्मृति सप्ताह के इस मौके पर सबसे पहले हमारी पार्टी के संस्थापक नेताओं व भारत की क्रांति के महान नेताओं–कॉमरेड़ चारु मजुमदार एवं कॉमरेड़ कन्हाई चटर्जी को दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सिर झुकाकर विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती है। नक्सलबाड़ी किसान सशस्त्र संघर्ष के समय से लेकर आज तक हमारे देश की नव जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लक्ष्य से जारी क्रांतिकारी जनयुद्ध में पंद्रह हजार से भी ज्यादा इस देश की उत्तम संतानों–पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकारों, जन संगठनों के नेताओं, कार्यकर्ताओं व क्रांतिकारी जनता जिनमें युवक–युवतियों, मजदूर–किसानों, छात्र–बुद्धिजीवियों ने अपनी प्राणों की आहुति दी। इस क्रम में दण्डकारण्य एवं देश भर में पिछले सालभर में कई कॉमरेडों ने जनता के लिए अपनी जानें दीं। इनमें से अधिकांश कॉमरेड दुश्मन के फासीवादी सैनिक दमन अभियान–ग्रीनहंट के हमलों का मुकाबला करते हुए व फर्जी मुठभेड़ों में शहीद हुए हैं। कुछेक कॉमरेड दुर्घटनाओं में और कुछ कॉमरेड बीमारियों की वजह से शहीद हुए हैं। कुछेक कॉमरेड जेलों में बंदी जीवन बिताते हुए जेल अधिकारियों की साजिशाना लापरवाही के शिकार होकर इलाज के अभाव में जानें गंवाई। इन तमाम कॉमरेडों को प्रत्येक के नाम पर स्पेशल जोनल कमेटी लाल–लाल सलाम पेश करती है। उनके द्वारा स्थापित मूल्यों व आदर्शों को आत्मसात करते हुए उनके अधूरे आशयों की पूर्ति के लिए आखिरी दम तक आन्दोलन में डटे रहने का संकल्प लेती है। पिछले साल भर में क्रांतिकारी जन युद्ध में अपने अनमोल प्राणों का बलिदान देने वाले शहीदों के मां–बाप, भाई–बहनों, बंधु–मित्रों के प्रति दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सहानुभूति व सांत्वना प्रकट करती है एवं उन्हें ढांढस बंधाती है। यह ऐलान करती है कि पार्टी व क्रांतिकारी आन्दोलन उनके हर सुख–दुख में साथ है।

मौत सबके लिए बराबर है। लेकिन सबकी मौत हमारे लिए बराबर नहीं होती है। जनता के लिए, जनता की सेवा में मरना महान है और हिमालय पर्वत से भी ऊंचा है जबकि जन दुश्मनों की सेवा में मरना पंख से भी हल्का

है। हमारे वीर शहीदों ने जनता के लिए जिया और जनता के लिए जान दी। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। लेकिन उनके द्वारा स्थापित आदर्श, मूल्य, उनके योगदान, उनके बलिदान, उनके राजनीतिक–सांगठनिक–सैनिक कुशलताएं हमारे सामने हैं। शहीदों के उन तमाम सर्वहारा वर्गीय उत्तम गुणों को आत्मसात करेंगे। उनके बलिदानों से प्रेरणा व सबक लेकर जनयुद्ध की लाल राह पर कदम बढ़ायेंगे। शोषण विहीन समाज की स्थापना के उनके अधूरे सपने को पूरा करने का दृढ़ संकल्प लेंगे।

केंद्र व राज्य में सत्तासीन ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा सरकारों ने क्रांतिकारी आन्दोलन के सफाये के उन्मादी उद्देश्य से 2009 से जारी फासीवादी सैनिक दमन अभियान–ग्रीनहंट के तीसरे चरण के हमलों को अभूतपूर्व ढ़ंग से तेज किया है। सुचना आधारित हमलें, झूठी मुठभेड़ें बेरोकटोक जारी हैं। पुलिस एवं अर्ध–सैनिक बलों जिनके हाथ जनता व क्रांतिकारियों के खून से सने हैं, द्वारा जनता को जबरन सामान बांटने के सिविक एक्शन प्रोग्राम आयोजित किये जा रहे हैं। यह एक क्रूर मजाक है। हालांकि संघर्षरत जनता ऐसे कार्यक्रमों का बहिष्कार कर रही है। हर जगह इनका विरोध करना चाहिए। संघर्षरत जनता की एकता को खत्म करने व जनता के एक छोटे तबके को भ्रमित करके अपने पक्ष में करने की साजिश के तहत झूठी सुधार योजनाओं को अमल में लाया जा रहा है। संसाधनों की सस्ती लूट व सशस्त्र बलों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए ही संघर्ष इलाकों में रेल्वे लाइन, सड़क, पुल–पुलियाओं, मोबाइल टावरों का निर्माण तेजी से किया जा रहा है। जनता के जबर्दस्त विरोध के बावजूद व उस विरोध को सशस्त्र बलों के सहारे दबाते हुए ये कार्य किये जा रहे हैं। संघर्ष इलाकों में प्रस्तावित खनन परियोजनाओं, वृहद कारखानों व बांध स्थलों के इर्द–गिर्द पुलिस व अर्ध सैनिक बलों के नये–नये अड्डे बनाये जा रहे हैं। पुलिस संरक्षण में, दमन के सहारे इन तमाम परियोजनाओं पर अमल करने सरकार आतुर है। दिवालिया आत्मसमर्पण नीति, गद्दारी व भीतरघात को जोर–शोर से प्रचारित किया जा रहा है और प्रोत्साहित किया जा रहा है। पार्टी कतारों, पीएलजीए के योद्धाओं, स्थानीय पार्टी निर्माणों, क्रांतिकारी जनताना सरकारों व जन संगठनों के नेताओं व कार्यकर्ताओं के सिरों पर ईनाम घोषित करके उनका शिकार करने की अमानवीय, पाशविक व फासीवादी प्रक्रिया जोरों पर चल रही है। हालांकि हमारे कतारों के कुछ कमजोर, राजनीतिक व नैतिक रूप से पतित लोग ही दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर रहे हैं लेकिन संघर्षरत जनता आत्मसमर्पण से नफरत कर रही है व गांवों में आने पर आत्मसमर्पित गद्दारों की पिटाई कर रही है, उनके मुंह पर थूक रही है। मनोवैज्ञानिक हमले के तहत पार्टी के खिलाफ लगातार झूठा प्रचार किया जा रहा है। पीएलजीए कॉमरेडों के परिवारजनों का काउंसिलिंग किया जा रहा है और उनके द्वारा जबरन बयान जारी करवाया जा रहा है। सरकारों की कम तीव्रता वाली युद्ध नीति के तहत ही यह चौतरफा हमला जारी है। ग्रीनहंट दमन अभियान को परास्त करने के लक्ष्य से इन तमाम नीच व घृणित कोशिशों को नाकाम करते हुए क्रांतिकारी आन्दोलन प्रतिक्रांति व प्रतिक्रियावाद का मजबूती से सामना कर रहा है। इसी सिलसिले में विगत एक साल में पीएलजीए ने कसालपाड, पिडिमेल, मर्सुकोला, बांदे, पखंजूर, कल्लेडा, मूसपर्सी, छोटे बेठिया, बासिंग के अलावा और भी कइयों जगह दुश्मन बलों पर हमलें करके जबर्दस्त झटकें पहुंचाया और तद्वारा पार्टी, क्रांतिकारी जनताना सरकारों व क्रांतिकारी आन्दोलन की रक्षा की।

इन कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण हमलों व मुठभेड़ों में पुलिस, कमांडो व अर्ध सैनिक बलों के साथ हिम्मत व साहस के साथ आमने–सामने लड़ते हुए पश्चिम बस्तर में कंपनी–दो के कमांडर कॉ. मासाल व कंपनी सदस्य कॉ. केशाल, एसीएम कॉ. बुदरी, कॉ. राकेश, एवं पार्टी सदस्याएं कॉ. रामबत्ति, कॉ. जमली, कॉ. लक्ष्मी, कॉ. सोड़ी लालु, कॉ. कलमु लक्ष्मी एवं मिलीशिया कॉ. ताति सुक्कु; दक्षिण बस्तर में सेक्शन डिप्टी कमंडर कॉ. पोडियामी विज्जा, पार्टी सदस्या कॉ. सोड़ी देवे, मिलिशिया सदस्य कॉ. मड़वी हंदा व ओडि मासा; आरकेबी में एसीएम कॉ. सुनिल एवं कॉ. विकास; उत्तर बस्तर में एसीएम कॉ. जमली, कॉ. सुकोती; माड में पार्टी सदस्य कॉ. दसरु, कॉ. जोगाल; महाराष्ट्र में एसीएम कॉ. कृष्णा, कॉ. सोनु; एओबी में डीवीसीएम कॉ. शरत एवं एक मिलीशिया सदस्य; तेलंगाना में पार्टी सदस्य कॉ. विवेक, कॉ. कोर्राम जोगी, कॉ. देवी; फर्जी मुठभेड़ों में पूर्व बस्तर में पीपीसीएम कॉ. धर्मु, मिलीशिया सदस्य कॉ. जलकु, उत्तर बस्तर में

शासक वर्गों द्वारा जनता के मन में बिठायी गयी सड़ी–गली व आत्म केंद्रित सोच के तरीके व संस्कृति के विरोध में पार्टी ने इन कुरबानियों के जरिए एक वैकल्पिक सोच व संस्कृति जो उच्च मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं, को आगे बढ़ाया। इस तरह इन कुरबानियों ने समाज के पीड़ित वर्गों व तबकों को क्रांतिकारी बदलाव के लिए लड़ने प्रेरित किया।

– कॉमरेड गणपति, महासचिव, भाकपा (माओवादी), एमआईबी को दिये साक्षात्कार से

शहीद स्मृति सप्ताह के अवसर पर डीकेएसजेड़सी का आह्वान

एसीएम कॉ. फूलसिंह; दक्षिण बस्तर में डोड्डा भीमा व मुचाकी रामा; पश्चिम बस्तर में मिलीशिया सदस्य कॉ. मिच्चा मनोज, जन संगठन सदस्य कॉ. कोरसा आयतु, झारखण्ड में 12 कॉमरेड शहीद हुए हैं। बीमारी से पार्टी सदस्या कॉ. मीना; दुर्घटना में पीएम आवलम पोदिया; सौनिक दुर्घटनाओ मे पीपीसीएम कॉ. पूनेम मेघनाथ व कॉ. माडवी विकास, एवं सदस्य कॉ. जीराल, कॉ. विज्जाल, मिलीशिया सदस्य कॉ. जिला, जीपीसी सदस्य कॉ. कारम मंगु; गांवों पर हमलों में भूमकाल मिलीशिया सदस्य कॉ. कारम आयतु, कॉ. हेमला बदरु शहीद हुए हैं। इनके अलावा और भी कई कॉमरेडों ने जनयुद्ध में अपनी जानें दी। सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा कॉ. जमली, रामबत्ती व लक्ष्मी के साथ घायल अवस्था में अत्याचार करके उनकी निर्मम हत्या की गयी।

पीएलजीए कॉमरेड शहीद साथियों के शवों को जान पर खेलकर युद्ध भूमि से निकाल लाकर जनता के समक्ष क्रांतिकारी परंपराओं के अनुरूप अंतिम संस्कार कर रहे हैं। जहां कहीं भी ऐसे मौके नहीं मिलते हैं और यदि पुलिस लाशों को अपने साथ ले जाती है, जनता लड़ भिड़ कर कैंप/थानों से अपने लाडलों की लाशें गांवों में लाकर अंतिम संस्कार कर रही हैं। पुलिस, अर्ध सैनिक बलों द्वारा हमारे प्यारे शहीद साथियों के शवों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा है। खासकर महिला कॉमरेडों के शवों के साथ वे असभ्य, अश्लील, घोर आपत्तिजनक, घृणित व नीच हरकतें कर रहे हैं। शवों की नग्न तस्वीरों को इंटरनेट में रखकर सरकारी सशस्त्र बल न केवल अपनी ओछी मानसिकता बल्कि पाशविक चरित्र का परिचय दे रहे हैं जो कि निंदनीय तो है ही और जिसका सभी स्तरों पर हर संभव विरोध करना चाहिए।

केंद्र व राज्य सरकारें 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया', 'मेक इन छत्तीसगढ़', 'वाइब्रंट छत्तीसगढ़' 'मेक इन विदर्भ', 'स्किल इंडिया' आदि नारों के साथ देश व राज्य की प्राकृतिक संपदाओं व संसाधनों को मिट्टी के मोल देशी, विदेशी कॉरपोरेट घरानों को सौंपने की साजिश पर जोर शोर से अमल कर रही हैं। मोदी का भूमि अधिग्रहण अध्यादेश इसका जीता जागता उदाहरण है। इन सरकारों की जन विरोधी नीतियों की वजह से किसानों, मजदूरों, आदिवासियों, छात्रों, शिक्षकों, जूनियर डॉक्टरों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं, मितानिनों व पंचायत, वन, स्वास्थ्य सहित तमाम सरकारी विभागों के कर्मचारियों का जीवन दूभर होता जा रहा है। ये हर साल सड़क पर उतरने मजबूर हैं। 'घर वापसी' के नाम पर जबरन धर्मांतरण जारी है। महिलाओं पर अत्याचार लगातार बढ़ रहे हैं। रमण सिंह के चावल घोटाला सहित कईयों घोटाले सामने आ रहे हैं। 'चांउर वाले बाबा' अब चावल, नमक, गेंहु एक एक करके सब बंद कर रहे हैं।

जन संघर्षों व जनयुद्ध को बेहतर तालमेल के साथ जारी रखने की वजह से पिछले 10–25 सालों से लंबित परियोजनाओं–बोधघाट एवं मेंढकी बांधों, रावघाट, चारगांव, बुधियारी माड, कुव्वे, आमदाई, सुरजागढ़, कोरची लौह प्रकल्प,राजनांदगांव जिले में स्थित दो दर्जन से भी ज्यादा खदानों; टाटा, एस्सार इस्पात कारखानों आदि को शुरु करने सरकारें एडी–चोटी का जोर लगा रही हैं। इनके अलावा विगत 9 मई को मोदी ने दंतेवाडा में डिलमिली अल्ट्रा मेगा स्टील प्लांट एवं रावघाट–जगदलपुर रेल लाइन का उद्घाटन किया। यहां यह बताना लाजिमी होगा कि मोदी ने पूंजी निवेश और सलवा जुडुम–2 को साथ–साथ लाया है। हालांकि यहां गौर करने वाली बात यह है कि मोदी के उद्घाटन के दिन से ही डिलमिली के हजारों लोगों ने 'जान देंगे पर जमीन नहीं' के नारे के साथ इसका विरोध शुरु किया है। जिंदल के खिलाफ रायगढ़ की जनता, कनहर बांध के खिलाफ बलरामपुर की जनता पुलिस गोलीबारी का सामना करती हुई संघर्ष कर रही है। कुलमिलाकर देखा जाए तो सरकारों की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जनता जहां–तहां आन्दोलनों में उमड़ रही है। कश्मीर व पूर्वोत्तर राज्यों में जन संघर्ष व हथियारबंद संघर्ष फिर से जोर पकड रहे हैं। अमर शहीदों की बोल्शेविक स्फूर्ति को अपनाकर, दण्डकारण्य व देश, दुनिया में दिन–ब–दिन ज्यादा अनुकूल बनती क्रांतिकारी परिस्थिति का सही उपयोग करते हुए जनयुद्ध को तेज करके ऑपरेशन ग्रीनहंट को हरायेंगे। शहीदों के बलिदानों से हासिल उपलब्धियों को बचाते हुए जनता की जनवादी राजसत्ता के अंग– क्रांतिकारी जनताना सरकारों को मजबूत करेंगे व विस्तार करेंगे।

प्यारे साथियों!

28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीदों की याद में गांव–गांव में यादगार सभाओं का आयोजन करो। स्मारकों का रंग–रोगन करो। नये स्मारकों का निर्माण करो। पर्चा, पोस्टर, पुस्तिकाओं, गीतों, नाटकों के माध्यम से हमारे प्यारे शहीदों की जीवनियों, उनके बलिदानों, आदर्शों व मूल्यों के बारे में जनता के बीच में व्यापक रूप से प्रचार करो।

- केंद्र व राज्य सरकारों की दिवालिया आत्मसमर्पण नीति को मात देंगे।
- शहीद योद्धाओं के नक्शे कदम आखिरी दम तक आन्दोलन में डटे रहने का संकल्प लेंगे!